

विल्बर राइट (1867-1912)

ऑरविल राइट (1871-1948)

हवाई जहाज़ के आविष्कारक

विशेष उड़ान
भरने वाले :
चमगादड़, पतंग,
यांत्रिक मशीन आदि

मैं पतंग
खरीदना चाहता हूँ!

हवा मुझे उड़ा
ले गई!

कृपा,
उड़ने वाली
खबर!

बचपन में विल्बर और ऑरविल राइट को नई-नई चीज़ें बनाने में मज़ा आता था - खासकर उड़ने वाली चीज़ें।
अपने शहर डेटन, ओहिओ में वो अपने हाथ से बनी चीज़ों को बेचकर कुछ पैसे कमा लेते थे।

हड्डियां हिलाने
वाली साइकिल
खरीदें - राइट
बंधुओं से!

यही
यातायात का
भविष्य होगा
- उड़ान नहीं!

ठीक!

क्या
आदमी
उड़ेगा?

हम वो कर पाएंगे!

हम उड़ेंगे!

फिर दोनों भाइयों ने मिलकर एक साइकिल की दुकान खोली।
उस समय साइकिलें लोकप्रिय हो रही थीं। दोनों भाइयों ने
साइकिल बनाने और मरम्मत करने में कुशलता हासिल की।

जब उन्होंने 1896 में, दबंग ग्लाइडर पायलट ऑटो
लिलिएंथल की मृत्यु की खबर सुनी तब उन्होंने अपनी खुद
की उड़ने वाली मशीन बनाने का दृढ़ निश्चय किया।

मैं उड़ रहा हूँ!

वो उड़ रही है!

ज़रा पंखों
को देखो!

तैयार!

तैयार!

अभी रुको!

अभी रुको!

काफी शोध के बाद उन्होंने एक ग्लाइडर बनाया और उसे
पतंग जैसे उड़ाया! फिर उन्होंने एक ऐसे ग्लाइडर की
योजना बनाई जिसमें बैठकर एक आदमी उड़ सके।

1900 और 1901 में, उन्होंने दो बड़े ग्लाइडर्स का परीक्षण किया।
पर दोनों असफल रहे।
दोनों भाइयों ने फिर उड़ान का सपना लगभग छोड़ दिया।

विंड टनल नोट्स

हवा जितनी तेजी से पंख पर से गुजरती है वो पंख पर उतना ही कम दबाव डालती है। अच्छे पंख का आकार वो होगा जिसमें नीचे की ओर दाब कम हो, जिससे पंख ऊपर की ओर उठे।

काम कैसा चल रहा है?

कांप रहा है!

तुम बहुत तेज जा रहे हो। हमें उसके बारे में वैज्ञानिक होना चाहिए!



सपना छोड़ने की बजाए वो वापिस गए. उन्होंने एक विंड-टनल बनाया और उसमें भिन्न-भिन्न आकार के पंख टेस्ट किए.

हमें बहुत कुछ सीखना है!

मैं पहले!

मैं छोड़ रहा हूँ!

मैं स्थिर हूँ!

मैं हवा में तैर रहा हूँ!



रनवे ड्रिल

टेक-ऑफ का तरीका

हटो, नहीं तो टकराओगे

उड़ान में कुशलताएं

मैं पेड़ हूँ - हट नहीं सकता.

मैं कैसे मुड़ूं?

स्टीयरिंग तकनीक

हम प्रगति कर रहे हैं!

सुरक्षित लैंडिंग तकनीक

उनका तीसरा ग्लाइडर बहुत सफल रहा. दोनों भाईयों ने उसमें करीब 1000 उड़ाने भरीं. उसके बाद उन्होंने अपने पहला प्रोपेलर वाला, इंजन-चलित विमान बनाना शुरू किया.

क्या वो कोई चिड़िया है?

नहीं वो सिर्फ आदमी है जो चिड़िया की पोशाख पहने है!

हाँ!

कहो "चीज़" और मुस्कुराओ!

हम सफल हुए! मैं उड़ पाया!



1903 के अंत तक वे उड़ान भरने को तैयार थे. 17 दिसंबर को किल-डेविल हिल, किटीहॉक, नार्थ कैरोलिना में ऑरविल ने "फ्लायर 1" विमान में उड़ान भरी और वो 12 सेकंड के लिए हवा में उड़ा. वो दुनिया की सबसे पहली पावर फ्लाइट थी!

ZOOM!
जूम!

बस बहाव के
साथ आगे बढ़ो!

एकदम गज़ब!

बत्तखों जरा
सावधान! वो एक
उड़ने वाला राक्षस है!

अगले दो सालों में विल्बर और ऑरविल ने दो और नए हवाईजहाज़ बनाए. वो लगातार अपने डिज़ाइन को बेहतर बनाते रहे. 1903 में "फ्लायर-3" हवा में 30-सेकंड से ज़्यादा उड़ा. वो मुड़ सकता था और उसकी रफ़्तार 35 मील प्रति घंटा थी.





मुझे कीड़ों का सूप
बनाना चाहिए!

हम उड़ान की दुनिया में
नया इतिहास बना रहे हैं!

बाप रे!



फिर
वैठे!

क्या स्पीड है!



बदमाश!



उसके लिए
अपने पंख मत
फड़फड़ाओ!



ठीक है, माँ!

फिर 1908 में अमरीकी सेना के साथ एक करार पर दस्तखत करने के बाद विल्बर ने अपनी उड़ने वाली मशीन के प्रदर्शन के लिए फ्रांस और पूरे अमरीका का दौरा किया. न्यूयॉर्क में वो स्टेचु ऑफ लिबर्टी के चारों ओर उड़ा जिसे देखकर नीचे खड़ी भीड़ दंग रह गई. अब विल्बर और ऑरविल ने हवा को जीत लिया था!